**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय**
**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya**
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) *(A*
***Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)***

# हिंदी, उर्दू आम जुबान की भाषा - कुलपति विभूति नारायण राय

## हिंदी विश्वविद्यालय व जर्मन विश्वविद्यालय के सहयोग से कार्यशाला का आयोजन

*कार्यशाला में उपस्थित हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, अधिकारी तथा टुबेगन विश्वविद्यालय, जर्मन के प्रतिनिधि एवं संकाय सदस्य।*

वर्धा दि. 8 अक्तूबर 2012: हिंदी और उर्दू दोनों भाषाएं एक हीं जैसी है। उनके बीच का अंतर सिर्फ इतना है कि दोनों अलग-अलग लिपि में लिखी जाती है। दोनों भाषाओं के बीच में जिन लोगों ने भी भेद करने की कोशिश की उन्हें असफलता हीं हाथ लगी। इस तरह के विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने रखे। वे जर्मनी के टुबेगन विश्वविद्यालय एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के विद्वानों के समक्ष उर्दू-हिंदी साहित्यिक जगत के पुनरेकीकरण विषय पर आयोजित कार्यशाला में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि तकनीक के माध्यम से लिपि को समाप्त करने की किसी भी कोशिश को खारिज किया जाना चाहिए ।

गौरतलब है कि जर्मन विश्वविद्यालय और हिंदी विश्वविद्यालय के बीच हिंदी के प्राचीन पांडुलिपियों को सहेजने को लेकर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय में दि. 7 और 8 अक्टूबर को किया गया। कार्यशाला में जर्मनी के टुबेगन विश्वविद्यालय के प्रो. इबरहार्ट पिच, दिव्यराज अमीय, सतेंद्र सिंह,

कर्मेंदु शिशिर, किशन कालजेयी, संजय जोशी, विभास वर्मा, मखमूर अहमद, मोहम्मद अरशद, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय हैदराबाद के हुसैन अब्बास शामिल हुए। जर्मनी में निवास कर रहे भारतीय विद्वान कर्मेंदु शिशिर ने कहा कि हिंदी के पांडुलिपियों के संरक्षण विषयक कार्यशाला उनके लिए गौरव का क्षण है। इस तरह के प्रयास से भारत के निकटतम अतीत को टटोला जा सकता है। इस अतीत का पता चलने पर समाज में व्याप्त सांप्रदायिक कटुता को भी दूर किया जा सकता है।

जर्मनी के टुबेगन विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई केंद्र में व्याख्याता प्रो. डॉ. दिव्यराज अमीय ने अपने द्वारा किए जा रहे डिजिटाइजिंग की प्रक्रिया के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म के कई ऐसे धार्मिक पुस्तकें हैं जिनका मूल स्वरूप उर्दू में लिखा गया है। यदि ये चीजें लोगों के बीच आती हैं तो समाज में व्याप्त धार्मिक कटुता को दूर किया जा सकता है।

जर्मन विद्वान् प्रो. इबरहार्ट पिच ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से उपस्थित विद्वानों को डिजिटाइजेशन के तत्व, संग्रहालय के लिए उपयुक्त सामग्री के चयन, कापीराइट के मामलों का हल, संरक्षण और फण्ड की प्रक्रिया के बारे मे बताया।

जर्मनी के टुबेगन विश्वविद्यालय में कार्यरत भारतीय मूल के विद्वान सत्येंद्र सिंह ने कोशियार प्रोजेक्ट के माध्यम से बताया कि आनेवाले दिनों में किसी भी पाण्डुलिपि को

कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ा जा सकेगा। इस दिशा में कार्य किया जा रहा है और जो स्क्रिप्ट पढ़ी जाए उसका उच्चारण हिंदी भाषियों के उच्चारण जैसा हो।

इस दौरान प्रख्यात साहित्यकार किशन कालजयी समेत कई विद्वानों ने अपने विचार रखे। समन्वय का कार्य विश्वविद्यालय के नाटयकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रतिकुलपति एवं विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने प्रस्तुत किया। इस दौरान हिंदी विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. कैलाश खामरे, वित्ताधिकारी संजय गवई, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो.अनिल कुमार राय अंकित, साहित्य विद्यापीठ के प्रो. रामवीर सिंह, डॉ. के. के. सिंह, डॉ. वीरपाल यादव, डॉ. सुनील कुमार सुमन, डॉ. अख्तर आलम, राजेश लेहकपुरे, शंभु जोशी, डॉ. श्रीरमन मिश्र, राकेश श्रीमाल, जगदीश दांगी, प्रो. विजय कौल, डॉ. मैत्रयी घोस, डॉ. धूमकेतु, अमरेंद्र शर्मा, डॉ. अनिल दुबे, डॉ. डी. एन. प्रसाद, डॉ. अन्नपूर्णा चर्ल, हरप्रीत कौर, राजेश्वर सिंह समेत विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य मौजूद थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी